

December '16				
5	12	19	26	
6	13	20	27	
7	14	21	28	
8	15	22	29	
9	16	23	30	
10	17	24	31	
11	18	25		

January '17				
30	2	9	16	23
31	3	10	17	24
	4	11	18	25
	5	12	19	26
	6	13	20	27
	7	14	21	28
	8	15	22	29

November 2016

316-050

Friday

11

10/7/20

Important

B. A. Part I
Hindi Honours
मान्यतापत्र
हिन्दी काठ
जायकी

डॉ० अरवि काभार
सुभासिंह प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
बनारस काठ
गढ़नाबाद

प्रश्न:- नागमती के विद्योग वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर:- पदमागत जायकी की मान्य रचना है। इसमें विद्योग अंगार की प्रधानता है। जायकी के पदमागत में नागमती का विद्योग वर्णन हिन्दी साहित्य के विद्योग वर्णन में सबसे उत्कृष्ट है।

नागमती का विद्योग वर्णन जायकी में आदितीय रूप में किया है। यह विरहीनमाद की अलंकार में वाग्मीकि, कामिदात आदि के नायकों के समागत आपना विरह-निषेधन पत्र, पत्रिका, पत्र, पत्रिका, पत्र, पत्रिका का विद्योग वर्णन अन्य कवियों के समागत आशयमादन मात्र नहीं रह जाया उनही के जिवन प्रकार मानव के हृदय में पत्र-पत्रिका के सहानुभूति प्राप्त करने की सुझावणा की है उसी प्रकार पत्र-पत्रिका के हृदय में सहानुभूति के साधन की भी बात है। नागमती की दशा जब तक पत्रिका का दशा आती है और वह उसके दुःख का कारण बूझकर उसका संप्रेषण तो जाने को तैयार

कमला:-

November 2016

12

317-049
Saturday

13. A. I. ...
Himeli
HONG
10/7/20

10

October '16

क्रमांशः -

11

November '16

M T W T F S S

जायवनी

हो जाते हैं। जायवनी जो उका पत्तों के द्वारा
जो संदेशों को भेजता है वह मान-गणों से रहित,
सुरक्षा-सौभाग्य की लाभांशों से उत्पन्न
नाम, प्रेम-संपादन कलाओं का प्रदर्शन है -
पदमादाति को कहे हैं विद्वानों।
कोल लोभाइ वही करि संगम ॥
सौहि सौधा को काजी न, लावी,
सौहि पिरि के चारुणहावी ॥

मनोव्य उपासित मंड -
प्राण, पशु-पक्षी आदि को किना प्रकार उकाके
सुखों को सुखी और सुखों में सुखी होते हैं
इको को जायवनी जो लड़े ही को बालिकों
का हृदयों को पित्रुलाया है। जायवनी की विपुल-
बलियों को लर-वा को उकाकी पानलादी के जो
मंड-प्राण सुखों सुखमाशु मंडे को सुखलाकीन
के विपुल लाते ही ल विपुल उठते हैं -
पुमाही जायवनी के लारी,
सुखों सुख सुख सुख सुखलावी ॥
जायव सुखि रहे काके फे।
सौहि पिरि लोको गहाहे ॥

13

318-048
Sunday

जायवनी द्वारा विपुल
कृपा का लवांग उत्पन्न प्रका होते हुकनी
उपाहाकाके लर जा होकर गंवार ही है -
होड सुख कला किंगवी,
सुखों सुख सुख सुख सुखलावी ॥
सौहि सुख सुख सुख सुख सुखलावी ॥
सौहि सुख सुख सुख सुख सुखलावी ॥

क्रमांशः -

	December '16					January '17				
1	5	12	19	26		30	6	13	20	27
2	6	13	20	27		31	7	14	21	28
3	7	14	21	28			8	15	22	29
4	8	15	22	29			9	16	23	30
5	9	16	23	30			10	17	24	31
6	10	17	24	31			11	18	25	
7	11	18	25				12	19	26	
							13	20	27	
							14	21	28	
							15	22	29	

3

कमरे: —
November 2016

B.A. Part I
Hindi Honors
गणपति

319-047

14

Monday

Important

पदमाचर में गणपति विरह-वर्णन के अन्तर्गत 'विरहकामना' की आधाई जिक्रों वंदना का अत्यन्त निर्मल और कौमल्य-वर्णन, हिन्दू दार्शनिक जीवित का अत्यन्त समकालीन चित्रण देवता को मिलता है। अर्थात् आधाई माह का चित्र यहाँ विरहकामना के अन्तर्गत प्रस्तुत कर रहा हूँ -

चढ़ा अर्थात्, गणपति वन्दना १
साजा विरह-दुःख दुःख लाजा ११
उदाहरण-वीजा चमकें यहँ उदिरा १
लौ-बाजा धरकहि बालकौ ११
आधाई घटा आधा यहँ फौरी १
कौ ! उदाव मदन हाँ घोरी ११

गणपति में गणपति के विरह-वर्णन को रोकना-विरह-वर्णन के रूप में प्रस्तुत किया है, जो कि के रूप में नहीं है। इसका कारण गणपति के विरह-वर्णन की सामर्थ्य और लक्षणा है। गणपति का विरह-वर्णन फारबरी के आशिक-भायुकों की अति निर्मल प्रकाश करने लाजा नहीं है। परन्तु वरुण भावरीय गणपति की गाना की साहित्यिक विरह-वर्णन है। यथा -

पुण्य जगत विर अथव आला १
हाँ शिवा लाह, मंदिर को लाला ११

इसी प्रकार विरहकामना आजा पव शरीर के रूपों को उदाहरणों को चित्रण और आधाई माह की वन्दना के माध्यम से प्रस्तुत किया है -

कमरे: —